Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's College, Samastipur
Email Id. Snehababli1987@gmail.com
Cont. no. 8409587640
B.A. Part - I (Hons)
Topic - Concepts of Upanisads.
Indian Philosophy

Topic :-

भारतीय दर्शन में उपनिषदों की अवधारणाएं।

उपनिषद् शब्द 'उप' एवं 'नि' उपसर्गपूर्वक सद् धातु में क्विप् प्रत्यय लगाने से बनता है। सद् धातु चार अर्थों में आती है - बैठना, नाश करना (विशरण), प्राप्त करना (गति) और शिथिल करना (अवसादन)। 'उप' का अर्थ है, 'समीप' और 'नि' का अर्थ है, 'निष्ठापूर्वक'। इस प्रकार उपनिषद् का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है, 'समीप' और 'नि' का अर्थ है, 'निष्ठापूर्वक'। इस प्रकार उपनिषद् का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है, 'शिष्य का गुरु के समीप परमतत्व का उपदेश सुनने के लिए निष्ठापूर्वक बैठना, जिससे उसकी अविद्या का नाश हो, ब्रह्म की प्राप्ति हो और उसके कर्म-बन्धन शिथिल हों। इसे 'ब्रह्मविद्या' भी

Scanned with CamScanner

कहा जाता है। चूँकि यह विद्या गुरु द्वारा शिष्य को एकान्त में ही जाती है, अतः इसे 'रहस्यविद्या' भी कहा जाता है। चूँकि यह विद्या गुरु द्वारा शिष्य को एकान्त में ही जाती है, अतः इसे 'रहस्यविद्या' भी कहा जाता है। शंकराचार्य ने 'कठोपनिषद्भाष्य' की भूमिका में लिखा है कि उपनिषद् शब्द का प्रमुख अर्थ 'ब्रह्मविद्या' और गौण अर्थ 'ब्रह्मविद्या' प्रतिपादक ग्रन्थ विशेष' से है। उपनिषद् को 'वेदान्त' भी कहते हैं, क्योंकि यह वैदिक साहित्य का अन्तिम भाग है या इसमें वैदिक ज्ञान के सारतत्व का विवेचन है।

विभिन्न स्रोतों से उपनिषदों की संख्या के विषय में अलग-अलग जानकारियाँ प्राप्त होती है। 'उपनिषद् वाक्य-महाकोष' में 223 उपनिषदों के नाम प्राप्त होते हैं। गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित 'कल्याण' के उपनिषद् अंक में 220 उपनिषदों के नाम प्राप्त होते हैं। मुक्तिकोपनिषद् उपनिषदों की संख्या 108 बताता है। लेकिन इनमें अधिकांश उपनिषद् ऐसे हैं। मुक्तिकोपनिषद् उपनिषद् जिनकी रचना बहुत बाद में हुई है।

उपनिषदों में तत्वविवेचन को सरल एवं रुचिकर बनाने के लिए संवाद और प्रश्नोत्तर शैली अपनायी गयी है। इनमें संवाद शैली में अध्यात्मिक प्रश्नों एवं अन्यान्य दार्शनिक विषयों का सरल विवेचन किया गया है।

Scanned with CamScanner

उपनिषद् ; भारतीय दर्शन के स्रोत

भारतीय विचारधारा के विकास में उपनिषदों का महत्वपूर्ण स्थान है। उपनिषदों की नींव पर सभी भारतीय दर्शनों एवं धर्मों के प्रासाद निर्मित हुए हैं। प्रायः उपनिषदों में बिखरे हुए बीजरूप विचारों से सभी दर्शनों को विकसित होने की प्रेरणा मिली।

भारतीय दर्शन के विभिन्न सम्प्रदायों पर उपनिषदों का व्यापक प्रभाव इस बात से स्पष्ट है कि बिना किसी अपवाद के सभी आस्तिक सम्प्रदाय अपने सिद्धान्तों का आदि स्रोत उपनिषदों में खोजते हैं तथा अपने पक्ष की पुष्टि हेतु उपनिषद् मन्त्रों को उद्धृत करते हैं। इनमें मीमांसा एवं वेदान्त दर्शन सीधे उपनिषदों पर आधारित है। उल्लेखनीय है कि मीमांसा उपनिषदों की कर्मकाण्डमूलक व्याख्या करती हुई है और वेदान्त ज्ञानमूलक। अन्य आस्तिक दर्शन वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार करते हुए भी नयी विचार-पद्धतियों को प्रस्तुत करते हैं। इनमें सांख्य, योग, न्याय एवं वैशेषिक दर्शन आते हैं। आधुनिक शोधों में चार्वाक, जैन एवं बौद्ध सदृश नास्तिक विचारधाराओं का मूल भी उपनिषदों में सिद्ध होता है। उपनिषद् भारतीय दर्शन के लिए सदैव एक ऐसे उद्गम-स्थल के समान रहे हैं जहाँ से सभी दार्शनिक सम्प्रदाय अनेक सरिताओं के समान बह निकले हैं।

Scanned with CamScanner